Vol II Issue VI Dec 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 6, Dec. 2012
ISSN:-2231-5063

Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

अद्वितीय साधना पद्धति के वाहक–संत दादूदयाल

दिशा पारीक

व्याख्याता संजय टी.टी. कॉलेज,
लालकोठी, जयपुर

प्रस्तावना :–

सत्य के तथ्य की खोज करना, जानकारी करना और अंततोगत्वा उसे प्रयत्न करना ही साधना का विषय है। अतः साध्य की प्राप्ति तक किये गये सारे प्रयत्न लक्ष्य को प्राप्त करने तक किये गये सारे प्रयास और अपने गंतव्य को प्राप्त करने तक की गयी सारी कोशिशें साधना के ही अन्तर्गत आती हैं।

वस्तुतः संतों की साधना में कर्म, ज्ञान, योग और भक्ति तत्त्वों का सहज सुंदरतम समन्वय है, जिसके परिणामस्वरूप संतों की इस साधना को 'सहज–साधना' के नाम से अभिहित किया गया है।1

संत दादू की साधना भी, इसी प्रकार, सहज साधना ही है जिसमें सहज कर्म, सहज ज्ञान, सहज योग और सहज भक्ति के विभिन्न मूल–तत्त्वों का सहज ही समन्वय हो पाता है। आपा और मनोविकारों का परित्याग, मनः स्थिरता निर्वैरिता या समत्व–भाव, अनभै, नाम–स्मरण, सत्संग, शरणागति, सेवा–भाव, प्रेम भक्ति और एकलयता आदि दादू की इसी सहज–साधना के साधन है।

माया–

माया सर्पिणी सब डसें, कनक कामणी होई।
ब्रह्मा, विष्न, महेश लौ, दादू बचै न कोई।2

दादू के अनुसार – माया में मन को नहीं लगाना चाहिए। इसके आस्वादन से मन रूपी मक्खन भी पत्थर का बन जाता है। परन्तु ब्रह्मा ज्योति प्रकाश के आगे यह क्षण भर में नष्ट हो जाती है। इसलिये वह सन्तों की चेरी बनी हुई है। ''दादू माया चेरी संत की।''

मन–दादू के अनुसार यह मन अत्यन्त चंचल है। इसको वश में रखना अत्यन्त दुःसाध्य है। शरीर को तो वश में किया जा सकता है पर मन को निग्रह करना अत्यन्त दुष्कर है।3

यह मन बड़े–बड़े ऋषि मुनि एवं तपस्वियों को भी पथभ्रष्ट कर देता है।4

दादूजी 'काचा' व 'पाका' दो रूप में मन को विभाजित करते हुए कहते है कि ''पाका' मन निश्चल होकर निरन्तर ईश्वर चिन्तन में संलग्न रहता है जबकि ''काचा'' मन चारों दिशाओं में घूमता फिरता है।5 यदि ईश्वरीय प्रेम के जल में मन को भिगो दिया जाये तो इसकी उड़ान बंद हो जाती है।6

गुरू का महत्व – संत दादूदयाल ने गुरू को महत्व दिया है। इनके अनुसार उस निराकार एवं सर्वव्यापी ब्रह्म को प्राप्त करने के लिये गुरू ही पथ प्रदर्शक होता है और वे ही अपने ज्ञान नौका द्वारा शिष्य को भवसागर पार उतारता है।6

सिख गोरू गुरू ग्वाल है, राख्या करिकरि लेई।
दादू राखै जनतकरि, आणिं धणी को देई।।8

नाम स्मरण– दादू नाम स्मरण को महत्व दिया है क्योंकि रामनाम की समस्त सम्पत्ति का आधार है। अतः उसी से संसार को पार किया जा सकता है। वे रामनाम को एक औषधि मानते हैं जिससे जीव के करोड़ों विषय विकार नष्ट हो जाते है। इस सम्बंध में दादू कहते है कि :–

नांव लिया तब जाणिए, ते तन मन रहै समाइ।
आदि अंति मधि एकरस कबहूँ भूलि न जाई।।8

सत्संग :– हरि स्मरण में मन को लगाने के लिए दादू ने साधु संगति को अनिवार्य शर्त बताया कि साधु के सम्पर्क में आने पर ही हृदय में भगवान के प्रति प्रेम का प्रादुर्भाव होता है लेकिन साधु की संगति प्रभू की कृपा होने पर ही प्राप्त होती है।

साधू मिले तब ऊपजे, प्रेम भक्ति रूचि होई।
दादू संगति साधु की, दया कर देवे सोई।।9

समता, दादू ''निर्वैर'' प्रवृत्ति का समर्थन करते हैं और वैर–भाव का विरोध करते है। उनके अनुसार संत–जन वही है जो जीव मात्र से निर्वैरी रहे, सबको समत्व की दृष्टि से अभेदपूर्ण भाव से देखे और अहं भाव का परित्याग कर सारी दुविधाओं को दूर करें।

काहै को दुख दीजिए, घटि घटि आत्माराम।
दादू सब संतोषिये, यह साधू का काम।।

सेव्य भावना – दादू के अनुसार सच्चा साधु वही है जिसमें सेव्य भावना की प्रबलता है।

दादू जे साहिब मानै नाहीं, तऊ न छाड़े सेव।
इहि अवलंबनि जीजिये, साहिब अलब अभेव।।

शरणागति या समर्पण–उपासना और तप की ब्रह्मा विधियों पर दादू तब तक विश्वास नहीं करते जब तक कि साधक के लक्ष्य में उपास्य का अखण्ड ध्यान न बना रहे।

दादू सेवग सांई बस किया, सौंप्या सब परिवार।

DSpace™

तब साहिब सेवा करैं, सेवग के दरबार।।

भाव भक्ति एवं एकलयता–''भाव भक्ति का तात्पर्य है अनुभूतियों पर आश्रित भव्य भावनाओं के द्वारा अनंत के दिव्य भाव में दत्तचित्त हो मग्न होना–लवलीन होना, सीमित हृदय का असीम के साथ अनुराग के सहारे, एकमेव होना और अद्वैतावस्था का अनुभव कर तादात्म्य की प्राप्ति करना।10

''प्रेम भक्ति जब ऊपजे, पंगुल ज्ञान विचार।
दादू हरि रस पाइये, छूटै सकल विकास।।''

विरहानुभूति–दादूजी कहते है कि ''विरह रूपी अग्नि में मन के सारे विकार नष्ट हो जाते है और बाद में वह ईश्वर के मिलन हेतु तड़प उठता है।11 वे फिर कहते है कि विरह सरिता की प्रेम तरंग में यह मन विषय शव रूपी पैरों से रहित होकर निश्चल हो जाता है और राम–नाम स्मरण द्वारा सब अंहकार नष्ट हो जाने पर वह क्षण भर के लिये भी स्मरण नहीं त्यागता।12

अहं भावना का परित्याग – दादूजी जितना लक्ष्य प्राप्ति का विरोध आपा अर्थात् अंहकार को समझते है उतना और किसी वस्तु को नहीं। इनका कथन है कि जहां अहम् विद्यमान है वहां परमात्मा नहीं है जहां परमात्मा की सत्ता वहां अहम नहीं है। यह दोनों एक ही जगह नहीं रह सकते है।

जहाँ राम तहंमै नहीं, मैं तहं नाहिं राम।
दादू महल बारीक है, द्वै को नाहिं ठाम।।13

संत दादू ने 'साधना' पक्ष में यम–नियमों की बहुत चर्चा की है जो कर्मयोगी को निषिध कर्मो से रोकते है उन्हें यम कहा जाता है। इसमें अंहिसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य है। इनकी वाणी में यम को बहुत उच्च स्थान दिया गया है। मन वचन और कर्म से किसी प्राणी को कष्ट नहीं देना, जो जैसा देखा, सुना वैसा वर्णन करना, दूसरे के धन को मिट्टी के समान समझना, चोरी न करना, अपनी इन्द्रियों पर काबू रखना ही यम है। साधारण भाषा में कहा गया है कि जो साधक को जन्म के हेतु भूत काम्य धर्मो से निवर्तित कर, मोक्ष हेतु भूत निष्काम धर्म में बाँध देते है उन्हें नियम कहा जाता है इनमें शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान है। दादू के अनुसार ''शारीरिक सफाई के साथ–साथ व्यक्ति को संतोषी होना चाहिये गृहस्थ जीवन का तप करके स्वाध्याय आदि से ईश्वर का भजन करें। ईश्वर ध्यान से व्यक्ति की सारी बाधायें दूर हो जाती है और आत्मोपलब्धि प्राप्त होती है।

यदि ब्रह्म प्राप्ति करनी है तो जीव को घट–घट में ब्रह्म को देखना होगा क्योंकि वह तो सर्वत्र व्याप्त है।

संदर्भ–सूची

1ण कृश्ण वल्लभ दवे, संत कवि दादू, पृ. 113
2ण डॉ. बलदेव बंशी, पूर्वोक्त पृ. 42
3ण श्री दादूवाणी, हस्तलिखित ग्रंथ क्रमांक 30298, मन को अंग
4ण वही, साखी 35
5ण वही, साखी 48
6ण श्री दादूवाणी, हस्तलिखित ग्रन्थ क्रमांक 6926, गुरूदेव को अंग, साखी 15, संवत् 1755, प्रा.वि.प्र. जोधपुर।
7ण डॉ. बलदेव वंशी पूर्वोक्त पृ 42
8ण वही, पृश्ठ 43
9ण वहीं, साखी 20
10ण कृश्ण वल्लभ दवे, संतकवि दादू, पृ 134
11ण श्री दादूवाणी, हस्तलिखित ग्रन्थ,क्रमांक 22535, 1653 ई. विरह को अंग,साखी 140
12ण वही, साखी 42
13ण वही, परचै के अंग, साखी 44

DSpace™

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net